न्यूज डायरी

तालिबान सरकार को स्वीकृति नहीं देगा यूरोपीय संघ

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) वाशिंगटन। अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे के बाद अब दुनिया के कई बड़े देश इस मुद्दे पर विचार–विमर्श करने में जुट गए हैं कि उनकी आगे की रणनीति क्या होगी। इस मुद्दे पर मंथन करने वाले कई देश तालिबान की सरकार को समर्थन या स्वीकृत न करने की भी बात कह चुके हैं। आने वाले दिन इस मुद्दे को लेकर काफी खास होने वाले हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि यूरोपीय संघ कुछ दिनों में तालिबान से बात कर सकता है।

वहीं अफगानिस्तान के मुद्दे पर ही अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन और ब्रिटेन के पीएम बोरिस जानसन अगले सप्ताह सात अन्य नेताओं के साथ वर्चुअल बैठक भी करने वाले हैं। भारत की बात करें तो वो भी इस मुद्दे पर विचार विमर्श करने में जुट गया है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन से बात की है। वहीं भारत और अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहाकार की भी इस बारे में बात हुई है।

तालिबान के गिरफ्त में आईं अफगानिस्तान की बहादुर महिला गवर्नर

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) काबुल। अफगानिस्तान की पहली महिला गवर्नर सलीमा मजारी को तालिबान आतंकियों ने कथित रूप से पकड़ लिया है। देश के बाल्ख प्रांत में तालिबान को करारा जवाब देने वाली सलीमा मजारी के बारे में तालिबान की ओर से अभी कोई बयान नहीं दिया गया है। जब अफगानिस्तान के राष्ट्रपति समेत कई बड़े नेता भाग खड़े हुए उस समय सलीमा चट्टान की तरह से अपने लोगों की बीच में जमी रहीं। खबरों में कहा गया है कि तालिबान ने सलीमा के चारकिंट जिले पर कब्जा कर लिया और उन्हें पकड़ लिया है। बताया जा रहा है कि जब अफगानिस्तान के कई प्रांत बिना लड़े ही तालिबान के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, उस समय भी सलीमा ने हार नहीं मानी। उन्होंने अपने प्रांत को बचाने के लिए हर संभाव कोशिश की लेकिन अंततः वह तालिबान की चंगुल में आ गईं।

बुर्का जरूरी नहीं, अफगान महिलाओं को पहनना ही होगा हिजाब

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) काबुल। अफगानिस्तान में सत्ता में आने के बाद अब तालिबान आतंकियों ने संकेत दिया है कि वे महिलाओं के लिए बुर्का को अनिवार्य नहीं बनाएंगे। इससे पहले के तालिबानी शासन में सिर से लेकर पांव तक ढंके रहने वाला बुर्का महिलाओं को पहनना पड़ता था जिसकी दुनियाभर में काफी आलोचना हुई थी। हालांकि अफगान महिलाओं को तालिबान राज में हिजाब पहनना ही होगा। वर्ष 1996 से 2001 के बीच लड़कियों के स्कूल बंद कर दिए गए थे और उन्हें यात्रा करने तथा काम करने पर रोक लगा दी गई थी। यही नहीं महिलाओं को सार्वजनिक स्थानों पर सिर से लेकर पांव तक ढंकने वाला बुर्का पहनने के लिए बाध्य किया जाता था। तालिबान के प्रवक्ता सुहैल शाहीन ने कहा कि हिजाब के लिए बुर्का एकमात्र विकल्प नहीं है।

तुर्की बोला–काबुल हवाई अड्डे की सुरक्षा पर अब तक कोई फैसला नही

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) अंकारा। तुर्की ने कहा है कि काबुल हवाई अड्डे की सुरक्षा को लेकर अब तक कोई फैसला नहीं लिया गया है। तुर्की ने उन रिपोर्टों का खंडन किया है जिसमें दावा किया गया है कि उसने काबुल के हवाई अड्डे की सुरक्षा जारी रखने की योजना को छोड़ दिया है। तुर्की ने कहा है कि वह तालिबान और अफगानिस्तान के राजनेताओं के बीच चल रही बातचीत के परिणामों की प्रतीक्षा कर रहा था। विदेश मंत्री मेवलुत कावुसोग्लू ने बुधवार को हुर्रियत अखबार छपे बयान में बताया कि हमें उम्मीद है कि वे शांतिपूर्ण तरीकों से एक समझौते पर पहुंचेंगे। इन बातचीतों होने के बाद हम इन चीजों के बारे में बात कर सकते हैं। तुर्की, एक नाटो सदस्य, जिसके लगभग 600 सैनिकों ने काबुल में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सुरक्षा प्रदान की। उसने यू.एस. और नाटो सैनिकों की वापसी के बाद हवाई अड्डे को चलाने और सुरक्षा देने का प्रस्ताव दिया है।

अफगान दूतावास ने उखाड़ फेकी अशरफ गनी की तस्वीर

अशरफ गनी की जगह पर अब अमरुल्ला सालेह की तस्वीर लगा दी है

घोषणा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

दुशांबे। अफगानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ गनी के देश छोड़ने के बाद उप राष्ट्रपति अमरुल्ला सालेह ने खुद को देश का राष्ट्रपति घोषित कर दिया है। सालेह की घोषणा का असर अब दिखने लगा है। ताजिकिस्तान में अफगानिस्तान के दूतावास ने अशरफ गनी की तस्वीर को उखाड़ फेंका है और उसकी जगह पर अब अमरुल्ला सालेह की तस्वीर लगा दी है। यही नहीं पंजशीर के शेर कहे जाने वाले कमांडर अहमद शाह मसूद की भी तस्वीर लगाई गई है।

माना जा रहा है कि ताजिकिस्तान में अफगान दूतावास ने खुलकर सालेह का समर्थन कर दिया है। ताजिकिस्तान अफगानिस्ध्तान से सटा हुआ देश है और सालेह भी ताजिक मूल के हैं। इस ऐलान के बाद तालिबान का पारा चढ़ना तय माना जा रहा है। इससे पहले अशरफ गनी के देश छोड़कर भाग जाने के बाद अमरुल्लाह सालेह ने खुद को अफगानिस्तान का

राष्ट्रपति घोषित कर दिया था। उन्होंने अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन पर भी निशाना साधते हुए कहा कि उनसे बहस करना अब बेकार है।

अफगानिस्तान पर जो बाइडेन से बहस करना बेकारः सालेह ने नॉर्दन अलायंस की तरह अफगान नागरिकों से तालिबान के विरोध में खड़े होने की भी अपील की है। अमरुल्लाह सालेह ने ट्वीट कर कहा कि अफगानिस्तान के संविधान के अनुसार, राष्ट्रपति की अनुपस्थिति, पलायन, इस्तीफा या मृत्यु में उपराष्ट्रपति कार्यवाहक राष्ट्रपति बन जाता है। मैं वर्तमान में अपने देश के अंदर हूं और वैध देखभाल करने वाला राष्ट्रपति हूं। मैं सभी नेताओं से उनके समर्थन और आम सहमति के लिए संपर्क कर रहा हूं।

उन्होंने दूसरे ट्वीट में अमेरिका पर निशाना साधते हुए कहा कि अब अफगानिस्तान पर जो बाइडेन से बहस करना बेकार है। उसे जाने दो। हमें अफगानों को यह साबित करना होगा कि अफगानिस्तान वियतनाम नहीं है और तालिबान भी दूर से वियतनामी कम्यूनिस्ट की तरह नहीं हैं। यूएस–नाटो के विपरीत हमने हौसला नहीं खोया है और आगे अपार संभावनाएं देख रहे हैं। चेतावनियां समाप्त हो गई हैं। प्रतिरोध में शामिल हों।

पाकिस्तानी करते हैं सालेह से नफरत

सालेह को अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआईए ने भी ट्रेनिंग दिया है। सालेह ने अपने जासूसों का ऐसा नेटवर्क तैयार किया है जो उन्हें अफगानिस्तान से लेकर पाकिस्तान तक में तालिबान और आईएसआई की हरकतों पर नजर रखने में मदद करता है। कहा जाता है कि सालेह के भारतीय खुफिया एजेंसी रॉ से अच्छे रिश्ते हैं। सालेह की इस दोस्ती की वजह से पाकिस्तानी उनसे नफरत करते हैं। जिहादियों के खिलाफ उनके सख्त कदमों के कारण तालिबान के वह सबसे बड़े दुश्मन हैं। तालिबानी सालेह को पकड़ना चाहते थे लेकिन वह चुपके से पंजशीर घाटी चले गए जो विद्रोहियों का अभेद्य किला है।

तालिबान के सबसे बड़े दुश्मन हैं अमरुल्ला सालेह

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) अफगानिस्तान। अफगानिस्तान में दशकों से विद्रोहियों का गढ़ रहे पंजशीर घाटी के एक बेटे ने तालिबान आतंकियों के खात्मे का प्रण किया है। जी हां यहां बात हो रही है कि तालिबान के सबसे बड़े दुश्मन और अफगानिस्तान के उप राष्ट्रपति अमरुल्ला सालेह की। अशरफ गनी के देश से फरार होने के बाद सालेह ने खुद को अफगानिस्तान का राष्ट्रपति घोषीत किया है। यह वही सालेह हैं जो अक्सर पाकिस्तान पर तीखे वार करते हैं और भारत के करीबी दोस्त हैं। यही नहीं तालिबान ने उन्हें मारने की कई बार कोशिश भी की है। इन सब से बेपरवाह सालेह से फिर से तालिबान के खिलाफ ऐलान–ए–जंग कर चुके हैं। वर्ष 2001 में अमेरिका पर हमले के बाद तालिबान के खिलाफ शुरू हुए अमेरिकी सैन्य अभियान के दौरान खुफिया एजेंसियों के प्रभारी थे और अमेरिका की मदद की। वर्ष 2006 में सालेह ने एनडीएस के चीफ रहने के दौरान तालिबान पर एक जमीनी सर्वेक्षण कराया था जो लगातार हमले कर रहे थे। उन्होंने पाया कि ये आतंकी पाकिस्तान में सक्रिय हैं और वहीं से हमले करते हैं। अपने अध्ययन को उन्होंने एक रिपोर्ट की शक्ल दी। इसका नाम तालिबान की रणनीति नाम दिया गया।

सऊदी अरब में पुरातत्वविदों को मिली हजारों हड्डियों से भरी गुफा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) रियाद। पुरातत्वविदों ने Umm Jirsan नामक एक 1.5 किलोमीटर लंबी लावा ट्यूब में फैली हड्डियों के एक विशाल संग्रह की खोज की है। लावा ट्यूब एक गुफा होती है जो ज्वालामुखी से निकलने वाले लावा से बनती है। इस गुफा में हजारों हड्डियां मिली हैं जिसमें कई मानव अवशेष भी शामिल हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि इन हड्डियों में 7,000 वर्षों लकड़बग्घों द्वारा इकट्ठा किया गया है। सऊदी अरब की गुफा में पाए गए हड्डियों के विशाल संग्रह में मवेशियों, ऊंटों, घोड़ों समेत कई जानवरों की हड्डियां और मानव खोपड़ी के अवशेष पाए गए हैं। जब पुरातत्वविदों ने गुफा से पाई गईं 1,917 हड्डियों और दांतों का विश्वेषण किया।

वे तीन घंटे तक मुझे नोंचते रहे, उछालते रहे...

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

पाकिस्तान में महिला के साथ तालिबानी हैवानियत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान से सटे अफगानिस्तान में तालिबान आतंकियों का राज आने के बाद अब इसका दुष्प्रभाव इमरान खान के देश में भी पड़ने लगा है। जिस जगह पर पाकिस्तान की नींव पड़ी थी, उस मीनार–ए–पाकिस्तान पर आजादी के जश्न के बीच तालिबानियों की तरह वहशी बने 400 लोगों ने एक महिला टिकटॉक स्ष्टार के साथ हैवानियत की सारी हदें पार कर दीं।

पीड़ित महिला ने बताया कि ये कट्टरपंथी उन्हें हवा में उछाल रहे थे और 3 घंटे तक नोचते रहे। इमरान खान के नया पाकिस्तान में महिला के साथ ऐसी दरिंदगी पर पूरे देश में गुस्सा फूट पड़ा है।

महिला ने कहा, मैंने आजादी के दिन के लिए नया ड्रेस बनवाया था। मैं अपने दोस्तों के साथ गई थी। इस बीच मैं वीडियो बना रही थी और तभी 300 से 400 लोग वहां पहुंच गए और वे हमारे ऊपर आ गए और सेल्फी लेने लगे। इसके बाद वे मेरे ऊपर आने लगे। ये लोग मेरे ऊपर आने लगा और मेरे पास जान बचाने के लिए एक ही विकल्प्प था कि पानी में कूद जाऊं लेकिन बहुत ऊंचाई वाली जगह होने के नाते मैं कूद नहीं सकी। वे मुझे 3 घंटे तक नोचते रहे।

पीड़िता ने बताया, मैंने पुलिस को फोन करती रही लेकिन कोई नहीं आया। एक और अपने पाकिस्ध्तान में सुरक्षित नहीं है तो कहीं पर नहीं है। जब एक औरत को सरेआम ऐसा किया जाता है तो उसके पास कुछ नहीं बचता। मैं अल्लाह से यही दुआ कर रही थी कि मुझे जमीन में समा लो। मेरे शरीर का कोई ऐसा हिस्सा नहीं है जहां पर निशान नहीं है। क्या पाकिस्तान की बेटी होने का यही नतीजा है। मेरे कपड़े को उतार दिया गया जबकि मैं उसे जीभरकर देख भी नहीं सकी थी। एक शख्स मेरे कपड़े उतार रहा था और दूसरा मेरे ऊपर फेंक रहा था।

ब्रिटेन देगा 20,000 अफगान शरणार्थियों को पनाह

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) लंदन। अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद वहां रह रहे लोग पलायन कर रहे हैं। इस बीच, ब्रिटेन ने कहा है कि वह 20,000 अफगान शरणार्थियों को शरण देने को तैयार है। ब्रिटेन की गृह मंत्री प्रीति पटेल ने कहा है कि यूनाइटेड किंगडम(यूके) अपने देश से भाग रहे 20,000 अफगान शरणार्थियों को अपने देश में शरण देगा। इसमें महिलाओं और लड़कियों को प्राथमिकता दी जाएगी। प्रीति पटेल ने बुधवार को ब्रिटिश उच्चायोग द्वारा जारी एक बयान में कहा, कि हमारी नई अफगान नागरिक पुनर्वास योजना उन 20,000 लोगों का स्वागत करती है जिन्हें अफगानिस्तान से भागने के लिए मजबूर किया गया है। जिनमें से पहले 5000 लोग अगले साल आएंगे। यूनाइटेड किंगडम मुख्य रूप से उन महिलाओं और लड़कियों को आश्रय प्रदान करेगा जो तालिबान के शासन में मानवाधिकार छिने जाने को लेकर भयभीत हैं। अफगान दुभाषियों, शिक्षकों और सामुदायिक कार्यकर्ताओं, जिन्होंने यूके मिशन के साथ काम किया है।